अफ्रीकी गुलामों का व्यापार

शर्ली न्यूमैन

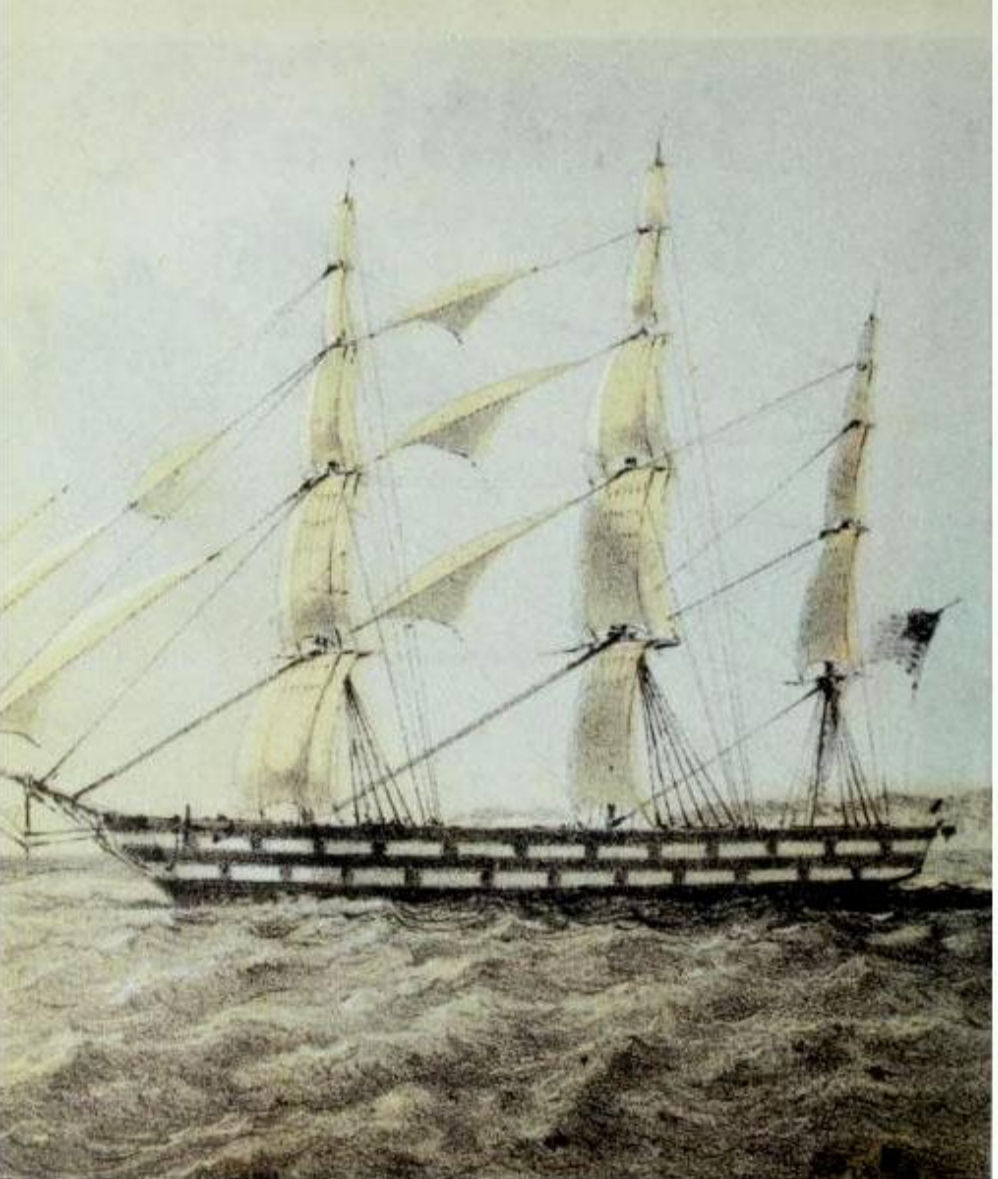

अफ्रीकी गुलामों का व्यापार

शर्ली न्यूमैन

विषय

अध्याय एक :	अफ्रीका में गुलामी
अध्याय दो :	यात्रा
अध्याय तीन :	अमेरिका में दासों का व्यापार
चौथा अध्याय :	दास व्यापार पर प्रतिबंध
अध्याय पाँच :	दक्षिण-अफ्रीका में यूरोपीय
समय-रेखा :	

1780 में ओलाउदा इक्वियानो का एक चित्र.

अध्याय एक

अफ्रीका में गुलामी

"एक दिन जब हमारे सभी लोग चले गए थे ...तब मैं और मेरी छोटी बहन ही घर की देखभाल करने के लिए बचे थे. फिर दो आदमी और एक महिला दीवार पर चढ़कर हमारे घर में आये और उन्होंने हम दोनों को पकड़ लिया," बहुत सालों बाद ओलाउदा इक्वियानो ने अपनी जीवनी में यह लिखा.

1760 में जब उसे और उसकी बहन को आज के गाम्बिया में से अगवा किया गया, तब ओलाउदा ग्यारह साल का था. पकड़ने वालों ने भाई-बहिन को तुरंत अलग कर दिया. उनमें से एक आदमी ने ओलाउदा को एक बोरे में डाला और अनाज के बोरे की तरह वो उसे अपने कंधे पर लादकर चल दिया.

पूर्वोत्तर अफ्रीका के अरब दास-व्यापारी सहारा रेगिस्तान पार करके दासों को ले जाते और उन्हें उत्तर-पश्चिम में बेच देते थे.

ओलाउदा को एक बार नहीं, कई बार गुलाम के रूप में बेंचा गया. वो बच गया, और फिर घर लौटा लेकिन उसका फिर से अपहरण कर लिया गया. इस बार अपहरणकर्ताओं ने उसे एक अंग्रेजी समुद्री कप्तान को बेच दिया.

ओलाउदा इक्वियानो के अपहरण के बहुत पहले से ही यूरोपीय लोग अफ्रीकी पुरुषों, महिलाओं और बच्चों का अपहरण कर उन्हें बेच रहे थे. 1400 में यूरोपीय लोगों के आने से पहले, अफ्रीकी लोग सैकड़ों वर्षों से दास-व्यापार के धंधे में लगे थे. 300 ईसा पूर्व में, उत्तरी-अफ्रीकी अरबों ने मध्य पूर्व के गुलाम बाजारों में काले अफ्रीकियों को बेचा था.

बहुत से गुलामों की भीषण गर्मी, थकावट और प्यास के कारण यात्रा में ही मृत्यु हो जाती थी. उनमें से जो बच जाते थे उनमें से कुछ को भूमध्य-सागर के पार यूरोप में बेच दिया जाता था. अरब व्यापारी. पश्चिमी तट और पूर्वी अफ्रीका के गुलामों को भी बेचते थे. अरब व्यापारियों के साथ, अफ्रीकी समूह भी गुलाम पकड़ने के लिए पड़ोसी गांवों पर छापा मारते थे.
आज कई लोग इस बात पर आश्चर्य प्रकट कर सकते हैं कि भला अफ्रीकियों ने अन्य अफ्रीकियों का व्यापार क्यों किया? अफ्रीका, एक विशाल महाद्वीप है, जो सैकड़ों विभिन्न समूहों या जनजातियों से बना है. लोग अपने समूह के सदस्यों के साथ पहचान रखते हैं. उदाहरण के लिए - फ्रांसीसी और डच दो अलग-अलग राष्ट्रीयताएं हैं, वैसे ही योरूबा लोग और हौसा लोग भी अलग-अलग जनजातियां हैं. जब योरूबा ने हौसा को हराया, तो उन्होंने उन हौसा लोगों को बेच दिया जिन्हें उन्होंने गुलामी जैसे कैद किया था.

अफ्रीका में एक दास का जीवन

अफ्रीका के भीतर बिकने वाले अधिकांश दास, युद्ध-कैदी होते थे. ओलाउदा इक्वियानो की तरह कुछ दासों को दास व्यापारियों ने अपहरण करके उन्हें गुलामों जैसे बेच दिया था (दास-व्यापारियों को स्लेवर्स भी कहा जाता है). जबकि अन्य दासों को उनके द्वारा किए गए अपराधों के लिए सजा के रूप में गुलाम बनाया जाता था. जब भोजन दुर्लभ होता था, तब अफ्रीकी माता-पिता अक्सर अपने बच्चों को बेचते थे ताकि उन्हें खाना तो मिल सके. कुछ लोगों कर्ज वापस न करने के कारण गुलाम बनते थे. इसके अलावा, कुछ क्षेत्रों में, जिन लोगों ने दासों का अपहरण किया वे दास-व्यापारी खुद गुलाम हो सकते थे. किसी भी गुलाम माँ का बच्चा, उस माँ के मालिक का गुलाम होता था.
दूसरे देशों की तुलना में अफ्रीका में गुलामों के साथ उतना खराब बर्ताव नहीं किया जाता था. वहां घरेलू दासों को अक्सर परिवार का एक हिस्सा माना जाता था. "कई दिनों की यात्रा के बाद, मैं एक सरदार के हाथों में आ गया," ओलाउदा इक्वियानो ने लिखा.

राजा से लेकर गुलामी तक

यहां तक कि अफ्रीकी राजघराने के प्रमुख या उसके अन्य सदस्य भी गुलाम बन सकते थे. इब्राहामा, फुलबे लोगों का एक राजकुमार था. उसने जेन और टिम्बकटू के अफ्रीकी स्कूलों में भूगोल, खगोल-विज्ञान, गणित, धर्म और कानून की पढ़ाई की थी. सत्रह साल की उम्र में, इब्राहमा सेना में शामिल हो गया और बाद में युद्ध-कैदी बन गया. उसे एक अंग्रेजी समुद्री कप्तान को बेच दिया गया जो बाद में उसे अमेरिका ले गया, और उसने उसे मिसिसिपी में गुलाम जैसे बेच दिया.

इसी तरह एक नाइजीरियाई राजा के बेटे प्रिंस उकासॉ को भी गुलाम बनाया गया था. एक अरब व्यापारी ने उसे साथ में आने के लिए कहा. उसने राजकुमार को पानी पर चलने वाले "पंख वाला घर" दिखाने के लिए आमंत्रित किया जो एक डच, दास जहाज था. वहां पहुंचकर अरब व्यापारी ने राजकुमार को डच समुद्री कप्तान को बेच दिया.

"इस आदमी की दो पत्नियां और कुछ बच्चे थे, और उन सभी ने मेरे साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया." गोल्ड कोस्ट (अब घाना) के "अशांति" नामक कबीलों में कोई गुलाम शादी कर सकता था, खुद की संपत्ति बना सकता था, यहां तक कि उसे अपने मालिक की कुछ संपत्ति भी मिल सकती थी. कुछ गुलामों के पास खुद के गुलाम थे. और कुछ गुलाम अपने शासक (मालिक) की मौत के बाद खुद राजा तक बने.

कुछ दासों ने सैनिकों के रूप में कार्य किया, और कुछ धीरे-धीरे उन्नति पाकर बड़े अधिकारियों के पदों पर पहुंचे. कुछ गुलामों ने सोने और नमक का खनन किया, पेड़ों से रबर एकत्र की, हाथी दांत आदि इकट्ठे किये. कुछ दासों ने प्लांटेशन नामक बड़े खेतों पर भी काम किया.

अफ्रीकी दास-व्यापारी द्वारा गांव पर हमला

"दासों को पकड़ने के लिए, अफ्रीकी दास-व्यापारी अक्सर घोड़ों पर सवार होकर अफ्रीकी गांवों को घेर लेते थे, वे घरों को जला देते थे और जो कोई भी भागने की कोशिश करता था, उसका पीछा करते थे.

हमलावर, बंदियों को एक-साथ लकड़ी के तख्तों या फिर जंजीर से बांधकर उन्हें घोड़ों की पूंछ से जोड़ देते थे. हमलावर खेतों में किसानों पर जल्दी-जल्दी छापा मारते थे ताकि अगर कोई उन पर वापिस हमला करे तो हमलावर वहां से भाग सकें. हमलावर, अपने दासों को एक-साथ एक बाड़ में या फिर मिट्टी के गड्ढों में रखते थे जिन्हें "हार्राकोन" कहा जाता था. यूरोपीय लोगों के अफ्रीका आने से पहले, अफ्रीकी दास हमलावर, अन्य अफ्रीकी समूहों के साथ दास-व्यापार करते थे.

अफ्रीकी दास-व्यापारी (स्लेवर्स) गुलाम पाने के लिए एक गांव पर हमला करते हैं.

यूरोपीय लोगों के आने के बाद, दासों की मांग बढ़ गई. यूरोपीय लोग अक्सर दासों के बदले हमलावरों या दास व्यापारियों को सामान बेंचते थे. कभी-कभी यूरोपीय खुद दासों को पकड़ने के लिए छापे मारते थे या फिर उस काम को करने के लिए अफ्रीकी दास हमलावरों को नियुक्त करते थे.

यूरोपियन लोगों ने समुद्री तट पर लगभग चालीस महल या किलों का निर्माण किया. इन किलों में वो अपहरण किये गए या खरीदे गए गुलामों को सुरक्षित रखते थे. पुर्तगालियों ने अटलांटिक महासागर के तट के पास एक ऊंची पहाड़ी पर एल्मिना फोर्ट का निर्माण किया जो अब घाना देश में है. एक समय में एल्मिना किले में एक हजार दासों को पकड़कर रखा जा सकता था. उसमें ऊंची मीनारें थीं और उसकी दीवारें 50 फीट (10 मीटर) मोटी थीं.

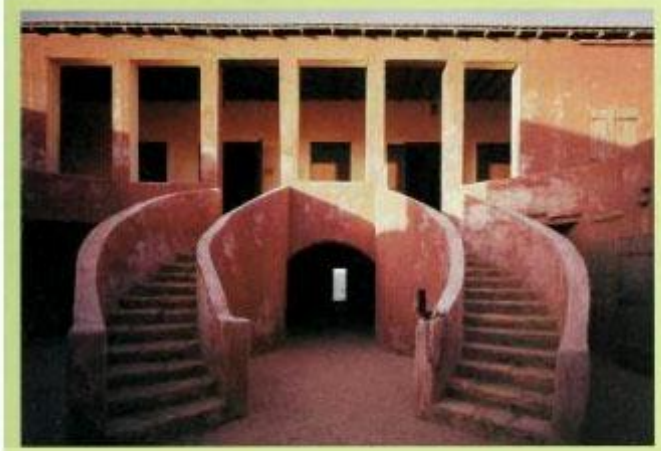

एक दिशा वाला दरवाज़ा

गोरी द्वीप पर, जो अब सेनेगल है, के तट से 2 मील (3-किमी) दूर पर दासों के जहाज पर सवार नहीं होने तक व्यापारी उन्हें अपने घरों के नीचे अंधेरे तहखाने में रखते थे. आज गोरी द्वीप में जाने वाले सैलानी उस दरवाज़े में खड़े हो सकते हैं, जहाँ से दास जहाजों में चढ़ते थे. वो यह कल्पना कर सकते हैं कि अनजान देशों में गुलाम जैसे जाते हुए अफ्रीकियों को कैसा लगाता होगा.

किला, पानी से भरी दो खाइयों से घिरा हुआ था - और चार सौ तोपें उसकी सुरक्षा करती थीं. मध्य-अफ्रीका के गुलामों को एक साथ जंजीर से बाँधा जाता था और फिर उन्हें सैकड़ों मील घसीटा जाता था और नदियों से लाया जाता था. फिर उन्हें जहाज़ मिलने तक लंबे समय तक कैद रखा जाता था. समय बीतने के साथ-साथ यूरोपीय किलों की मिलकियत भी बदलती रही क्योंकि विभिन्न देशों के व्यापारी, दासों के लिए आपस में प्रतिस्पर्धा कर रहे थे. इंग्लैंड, फ्रांस और हॉलैंड आखिर में गुलामों के व्यापार में सबसे सक्रिय मुल्क बने.

गुलाम व्यापार के खिलाफ शासक

हालाँकि कुछ अफ्रीकी शासक, दासों के व्यापार में लगे हुए थे, लेकिन कई अफ्रीकी शासकों ने इसके खिलाफ लड़ाई भी लड़ी. रानी एनजिंगा ने उस देश पर शासन किया जो अब अंगोला है. उन्होंने भागे हुए गुलामों को बचाया. 1600 में, रानी एनजिंगा ने पुर्तगाली दास-व्यापारियों के खिलाफ छोटे पैमाने पर हमले का नेतृत्व भी किया.

अफ्रीकियों ने यूरोपीय लोगों के साथ सहयोग किया.
कई अफ्रीकी समुदाय गुलामों के व्यापार में पैसा लगाने के लिए उतने ही उत्सुक थे जितने कि यूरोपीय देश थे. कई सालों तक अफ्रीकी शासकों ने यूरोपीय व्यापारियों को दास बेचे. 1726 में, डाहोमी (अब बेनिन) के राजा अगाजा ने, एक पत्र के साथ चालीस दासों को इंग्लैंड के राजा जॉर्ज-प्रथम को भेजा. राजा आगाजा "गुणवत्ता का सामान" खरीदना चाहता था, ऐसा उन्होंने अपने पत्र में लिखा. उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि वो काम की चीज के लिए ".. हजार दासों का व्यापार करने को तैयार थे."

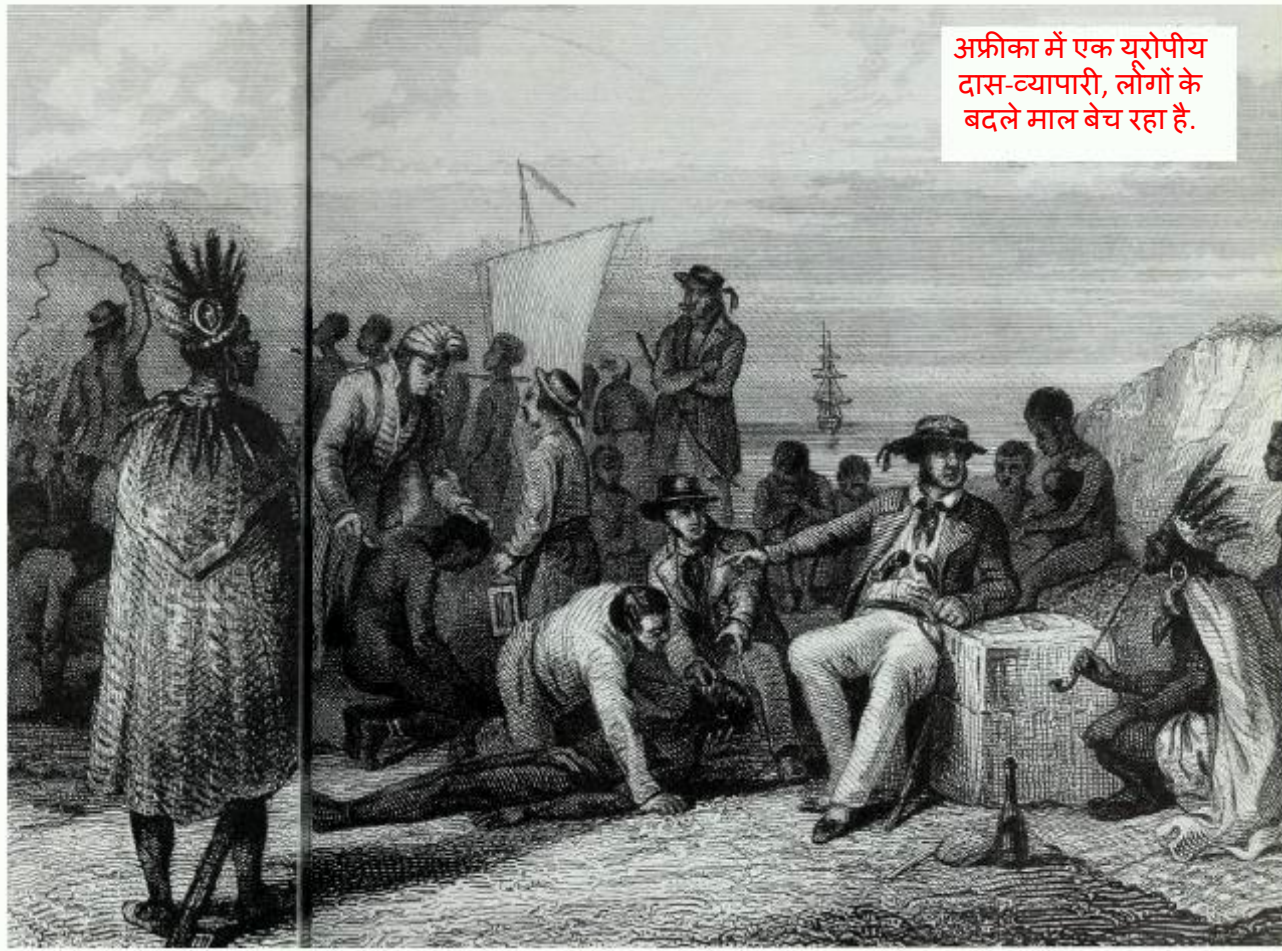

अफ्रीका में एक यूरोपीय दास-व्यापारी, लोगों के बदले माल बेच रहा है.

गुणवत्ता के सामान" का अर्थ था बंदूकें, बारूद, कपड़े, लोहे की सलाखें, तंबाकू, शराब, सोना और कौड़ी - जो कुछ अफ्रीकी जनजातियां करेंसी के रूप में उपयोग करती थीं.
एक डच गुलाम व्यापारी ने अपनी डायरी में लिखा, "बंदूकें और बारूद यहां लंबे समय से सबसे लोकप्रिय माल रहा है. अगर हम उन्हें इन चीज़ों की सप्लाई नहीं करेंगे तो हमें गुलाम भी नहीं मिलेंगे."

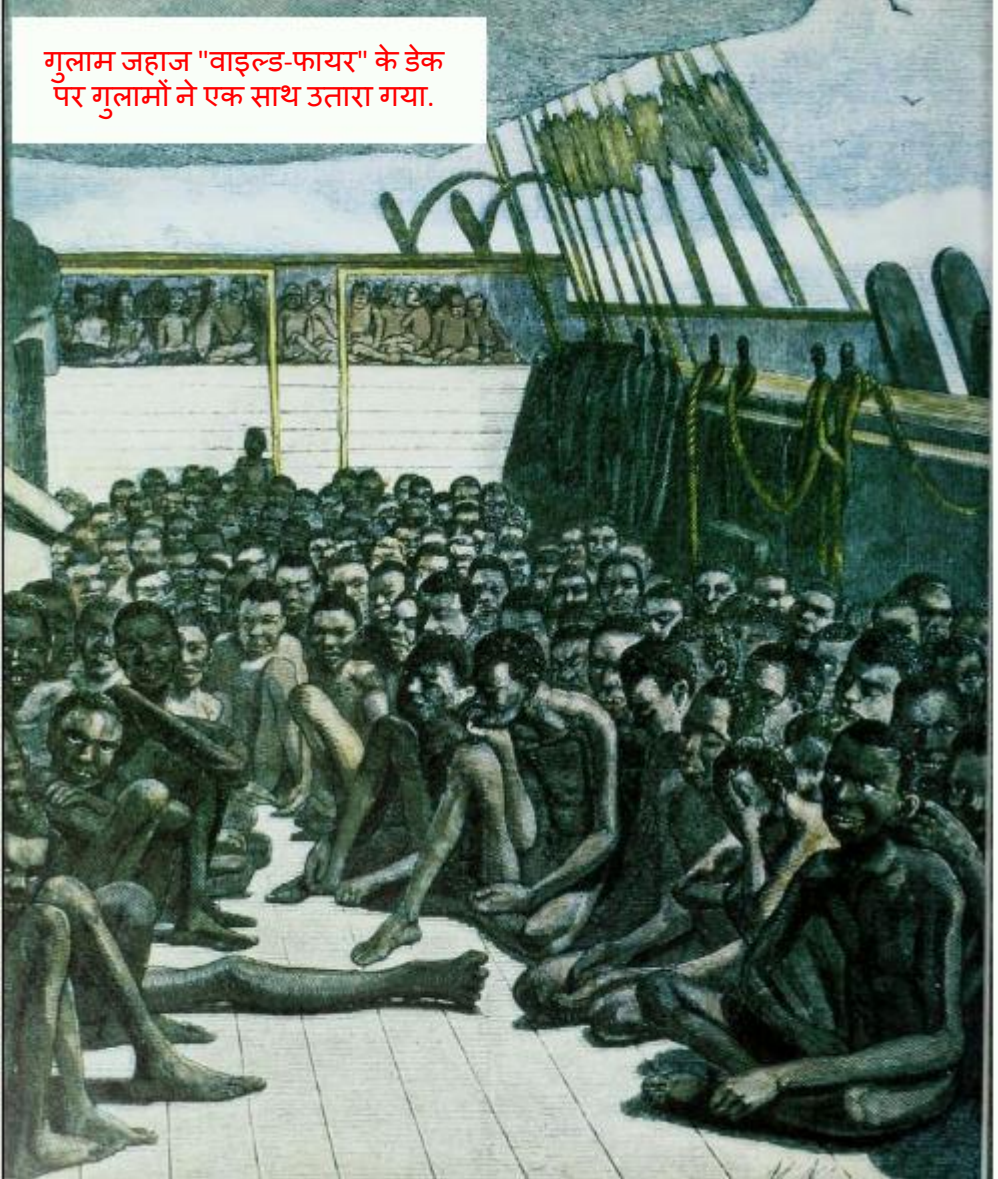

गुलाम जहाज "वाइल्ड-फायर" के डेक पर गुलामों ने एक साथ उतारा गया.

अध्याय दो

यात्रा

अफ्रीका के वेस्ट-कोस्ट पर स्थित व्यापारिक बंदरगाहों से शुरू करके, दासों को एक लंबी, कठिन यात्रा का सामना करना पड़ता था. सबसे पहले, यूरोपीय लोग गुलामों को यूरोप ले जाते और उन्हें वहां बेच देते. बाद में, जब विभिन्न यूरोपीय देशों के उपनिवेशवादी, अमेरिका में जाकर बसे, तब दासों को आमतौर पर अटलांटिक महासागर के रास्ते लाया जाता था और उन्हें बेचकर गुड़, चीनी और रम का कारोबार किया जाता था. फिर इस सामान को यूरोप वापस ले जाया जाता था और उनसे दूसरा माल और अधिक दास खरीदे जाते थे. पश्चिम-अफ्रीका से अमेरिका की यात्रा को "मध्य-मार्ग" कहा जाता था, और इसमें लगभग पैंतालीस दिन लगते थे.

दास-व्यापारी से मंत्री और गीतकार तक

जॉन न्यूटन एक अंग्रेजी समुद्री कप्तान थे, जिन्होंने दास व्यापार को त्याग दिया और वो चर्च के एक पादरी बन गए. उन्होंने "अमेजिंग ग्रेस" नामक भजन भी लिखा, जिसमें यह लाइन शामिल थी, "जिसने मुझे जैसे अभागे को बचाया." उन्होंने लिखा कि गुलामों का व्यापार करने से "दिल सुन्न हो जाता है और अधिकांश लोग अपने साथी प्राणियों के कष्टों के प्रति उदासीनता हो जाते हैं."

बाद में, कुछ दास-जहाज अफ्रीका के वेस्ट-कोस्ट, केप ऑफ गुड होप के आसपास के तट को छोड़कर चले गए, और उन्होंने गुलामों के अपहरण और व्यापार करने का काम पूर्वी तट पर शुरू किया. अफ्रीका के पूर्वी तट से अमेरिका तक की यात्रा में दो-तीन महीने लग जाते थे.

जहाजों के चालक दल, गुलामों के साथ किसी माल या जानवरों जैसा व्यवहार करते थे. "जहाज़ पर लाने के बाद चालक दल ने मुझे हवा में उछाला यह देखने के लिए क्या मैं स्वस्थ हूँ या नहीं," ओलाउदा इक्वियानो ने लिखा. उसने पहले गोरे लोगों को कभी नहीं देखा था. किसी ने उसे बताया था कि गोरे लोग काले लोगों को खाते थे. इसलिए जब उसने एक बड़े बर्तन में पानी को उबलते हुए देखा तब वो डर के मारे बेहोश हो गया. उसे लगा कि गोरे लोगों ने उसे पकाकर खाने की योजना बनाई थी.

विदेश यात्रा से पहले एक व्यापारी एक स्वस्थ दास को गरम लोहे से दागकर उसपर निशान लगा रहा है.

अफ्रीका में गुलामों के साथ कभी भी क्रूरतापूर्ण व्यवहार नहीं किया गया, उसने बाद में लिखा. वो अपने देश में ख़ुशी से किसी भी गुलाम के साथ जगह बदल सकता था.

जहाज पर चढ़ने से पहले अमेरिका जाने वाले अधिकांश दासों की जांच की जाती थी. उनकी मांसपेशियों और जोड़ों की जांच की जाती थी; उनके दाँत, सीने आदि की भी जांच की जाती थी. स्वस्थ दासों को उस खरीदार या कंपनी के “लोगो” या ठप्पे के साथ "ब्रांड" किया जाता था. गुलामों की छाती, कंधे या गाल पर लाल गर्म लोहे से ब्रांडिंग की जाती थी.

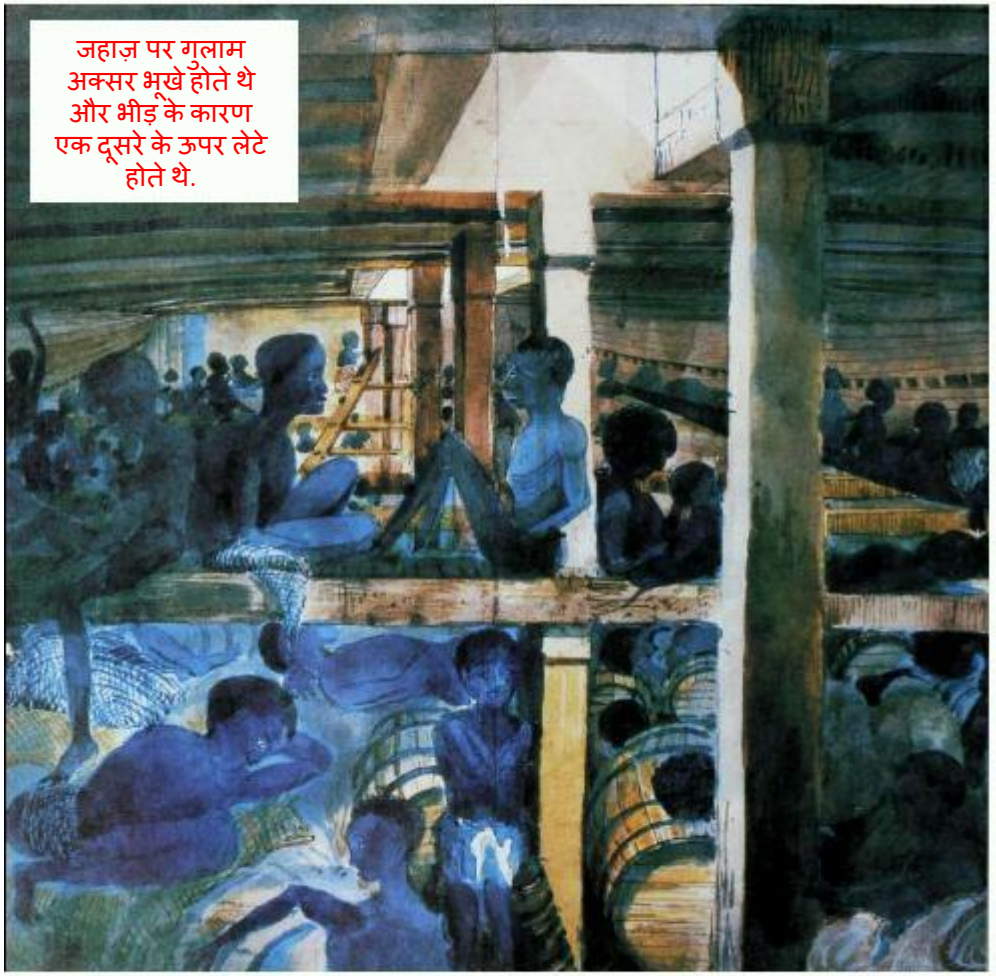

जहाज़ पर गुलाम अक्सर भूखे होते थे और भीड़ के कारण एक दूसरे के ऊपर लेटे होते थे.

समुद्र में बीमारी

एक फ्रांसीसी जहाज "रोडर" का एक हेल्समैन (जो व्यक्ति जहाज चलाता है) और अधिकांश चालक दल और गुलाम नेत्र रोग से पीड़ित हुए. आंखों की इस बीमारी में आंखों में सूजन आती है जो अस्थायी या कभी-कभी स्थायी अंधेपन का कारण बनती है. एक तूफान से बचने के बाद, "रोडर" ने अपना रास्ता खो दिया और फिर मदद के लिए एक स्पेनिश पोत को बुलाया. पर कोई मदद नहीं आई. स्पैनिश जहाज पर हर कोई अंधा हो गया. पर अंत में, "रोडर" के हेल्समैन की आंख की रोशनी बची रही, और जहाज वेस्ट-इंडीज में एक फ्रांसीसी द्वीप गुआदेलूप में जाकर उतरा. जहाज़ के कप्तान ने उनतीस अंधे गुलामों को उठाकर समुद्र में फेंक दिया. स्पेनिश जहाज कभी बंदरगाह तक नहीं पहुंचा. किसी को नहीं पता कि उसका क्या हश्र हुआ.

दिन के दौरान महिलाओं और बच्चों को कभी-कभी डेक पर जाने दिया जाता था. रात में, सभी गुलामों को माल रखने वाले गोदामों (होल्ड्स) में डेक के नीचे रखा जाता था. वहां इतनी भीड़ होती थी कि किसी के पास करवट लेने के लिए भी पर्याप्त जगह नहीं होती थी. गुलामों को समुद्र में कूदने से रोकने के लिए, उनके टखनों और उनकी कलाईयों पर एक-साथ जंजीर बाँधी जाती थी. ज़ंज़ीरे तब तक बाँधी जाती थीं जब तक अफ्रीकी समुद्री तट आँखों से ओझल न हो जाए.

अधिकांश गुलाम जहाजों के कप्तान सोचते थे कि अधिक-से-अधिक गुलामों को ले जाकर वो ज़्यादा कमाई कर पाएंगे. अगर यात्रा में कुछ गुलाम मर भी जाते तो उससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता था. भीड़-भाड़ के कारण कुछ जहाजों पर दासों को एक लकड़ी के पटरे पर सोना पड़ता था. कभी-कभी उन्हें एक के ऊपर एक शेल्व (बर्थ) पर लेटना पड़ता था. अक्सर भीड़ के कारण लोग उठ भी नहीं सकते थे. अन्य जहाजों में, जगह की इतनी तंगी थी कि गुलाम बिल्कुल भी लेट नहीं सकते थे.

जहाज़ पर भोजन और पानी

1600 में, जहाजों पर गुलामों को मुख्य रूप से पानी के साथ अनाज मिलाकर खिलाया जाता था. इस दलिये को पकाया जाता था. 1700 में इस खुराक में फल, बिस्कुट, सेम, और नमकीन मांस का एक छोटा टुकड़ा जोड़ा गया. जब गुलाम आत्महत्या करने के लिए भोजन त्याग देते थे, तो उनके मुंह को धातु के उपकरणों के साथ खुला रखा जाता था और उसमें से भोजन को अंदर ठूंसा जाता था.

यात्रा की समाप्ति के बाद, उन्हें बिक्री के लिए तैयार करने के लिए आमतौर पर अधिक भोजन दिया जाता था. कुछ दासों को एक खेत में ले जाया जाता था और उन्हें बेचने से पहले खूब खाना खिलाकर मोटा-तगड़ा बनाया जाता था.

दासों के लिए पानी की मात्रा सीमित होती थी और कभी-कभी उन्हें एक दिन में केवल एक कप पानी ही दिया जाता था. कई जहाजों पर, पानी गंदे ड्रमों में इकट्ठा किया जाता था, जिससे बीमारी या मृत्यु होती थी.

अमेरिका तक की यात्रा के दौरान हजारों गुलाम या खुद को मार डालते थे या फिर मर जाते थे. उदाहरण के लिए, एक पुर्तगाली जहाज ने 1,200 गुलामों के साथ अफ्रीका को छोड़ा. पर वो केवल 600 गुलामों के साथ ही ब्राजील, दक्षिण अमेरिका पहुंचा. अक्सर शार्क के स्कूल जहाजों का पीछा करते थे. शार्क, शवों को ओवरबोर्ड फेंके जाने या दासों के कूदने का इंतजार करती थीं.

शौचालय के रूप में इस्तेमाल किए जाने वाले बड़े खुले टबों में अक्सर बच्चे गिर जाते थे. डेक के नीचे गोदामों में अक्सर इतनी गर्मी और घुटन होती थी कि कुछ गुलाम दम घुट कर मर जाते थे. कुछ जहाजों पर हर सुबह दो या तीन मृत दास पाए जाते थे. जब समुद्र शांत होता था तो दासों को कभी-कभी थोड़ी देर के लिए ऊपर डेक पर लाया जाता था. उनपर लगातार कोड़े बरसाए जाते थे और उन्हें कुछ व्यायाम करने और चालक दल को खुश करने के लिए गाने और नृत्य करने के लिए मजबूर किया जाता था. तूफानी मौसम में दासों को नीचे गोदामों (होल्ड्स) में ही रखा जाता था. समुद्र में लहरों की वजह से जहाज़ के लगातार हिचकोले खाने के कारण लोगों को उल्टी आती थी, जिससे गोदाम की बदबू और भी बदतर हो जाती थी.

गुलाम विद्रोह

अधिकांश गुलाम विद्रोह, अफ्रीका से जहाजों के रवाना होने या उनके लैंड करने के समय होते थे. विद्रोह आमतौर पर असफल होते थे क्योंकि निहत्थे गुलाम, नाविकों की बंदूकों का मुकाबला नहीं कर सकते थे. जहाज के चालक दल के पास विद्रोही गुलामों को सजा देने के कई तरीके थे - नाविकों को मारना, गला घोंटना, लटकाना, गोली मारना (या शरीर के कुछ हिस्सों को काट देना), या फिर बागियों को समुद्र में डुबो देना.

टॉम्बा, एक बहादुर नेता

कुछ अंग्रेजी व्यापारियों ने गिनी में एक अफ्रीकी नेता टॉम्बा को गुलाम बना लिया, क्योंकि उसने अन्य अफ्रीकी नेताओं को दास व्यापार का विरोध करने के उकसाया था. टॉम्बा जहाज के नीचे माल वाले गोदाम (होल्ड्स) में था जिसे "रॉबर्ट" कहा जाता था. तब एक महिला-दास टॉम्बा के लिए एक हथौड़ा लाई . टॉम्बा, एक अन्य गुलाम, और दास महिला, चुपके से डेक पर ऊपर आये, जहां कुछ नाविक सो रहे थे. जैसे ही टॉम्बा ने एक सो रहे नाविक के सिर पर हथौड़ा मारा, वैसे ही कैप्टन हार्डिंग और बाकी चालक दल डेक पर आ पहुंचे.

टॉम्बा और अन्य दासों को लोहे के भारी जंज़ीरों में बाँधा गया. पुरुषों को बुरी तरह मारा गया, लेकिन उन्हें ज़िंदा रखा गया क्योंकि वे मजबूत थे और वे एक अच्छी कीमत पर बिकते. मादा दास को उसके अंगूठों द्वारा लहराया गया था, और फिर चाकू मारकर उसकी हत्या कर दी गई.

एक स्पेनिश जहाज़ "एमिसताड" पर सवार दासों का विद्रोह.

1532 में, एक पुर्तगाली जहाज "मिस्ट्रिकॉर्ड्टा" पर सौ गुलामों की जंजीरे ढीली होकर टूट गयीं. फिर गुलामों ने चालक दल के सभी लोगों को मार डाला. चालक दल के तीन बचे हुए सदस्य एक नाव में भाग निकले. लेकिन किसी को यह नहीं पता चला कि उन गुलामों का क्या हुआ.

तीस साल बाद एक स्पेनिश जहाज दक्षिण अमेरिका के तट पर ध्वस्त हो गया. तब बंदी दासों ने तूफ़ान से बच गए नाविकों को मार डाला. इलकास नाम का एक दास दक्षिण अमेरिका में ही बस गया और वो वहां बाद में स्थानीय इंडियंस का नेता बन गया.

1700 के दशक में, एक अंग्रेजी समुद्री कप्तान ने अफ्रीका में एक नदी के तट पर अपने जहाज क लंगर डाला. उसने कई अफ्रीकियों को व्यापार करने के लिए आमंत्रित किया. लेकिन व्यापार की बजाय, जहाज अफ्रीकियों के साथ निकल भागा. जब वो समुद्र तक पहुंचा तब एक तूफान ने उसे उसी स्थान पर लंगर डालने के लिए मजबूर किया गया जहां से अफ्रीकियों का अपहरण हुआ था. तब नदी के पास रहने वाले कुछ अफ्रीकी जहाज पर सवार हुए. उन्होंने अधिकांश चालक दल के लोगों को मार डाला और अफ्रीकी बंदियों को मुक्त किया.

1730 के दशक में निन्यानबे अफ्रीकियों ने एक ब्रिटिश जहाज "लिंक-जॉर्ज" पर नियंत्रण किया और उन्होंने चालक दल के कुछ सदस्यों को समुद्र में फेंक दिया. अन्य नाविकों और कप्तान ने बंदूकों से लैस होकर खुद को एक केबिन में बंद कर लिया. उन्हें उम्मीद थी कि अफ्रीकी जहाज़ चलाने में सक्षम नहीं होंगे और जल्द ही वो आत्मसमर्पण करेंगे. परन्तु उनका सोच गलत निकला. अफ्रीकी बंदी जहाज वापस अफ्रीका ले गए और फिर वे भाग निकले.

यात्रा समाप्त होने पर

जब दास जहाज अमेरिका में पहुँचते तो जो भी दास यात्रा के बाद ज़िंदा बचते, उन्हें खुले बाज़ार में बेच दिया जाता था. खरीदार फटाफट गुलामों के बाजार में आते और अपनी मनपसंद के गुलामों को खरीदते थे. जब औलाउद इक्विनो, वेस्ट इंडीज के ब्रिटिश द्वीप बारबाडोस में उतरा तो उसे भी फटाफट बेच दिया गया.

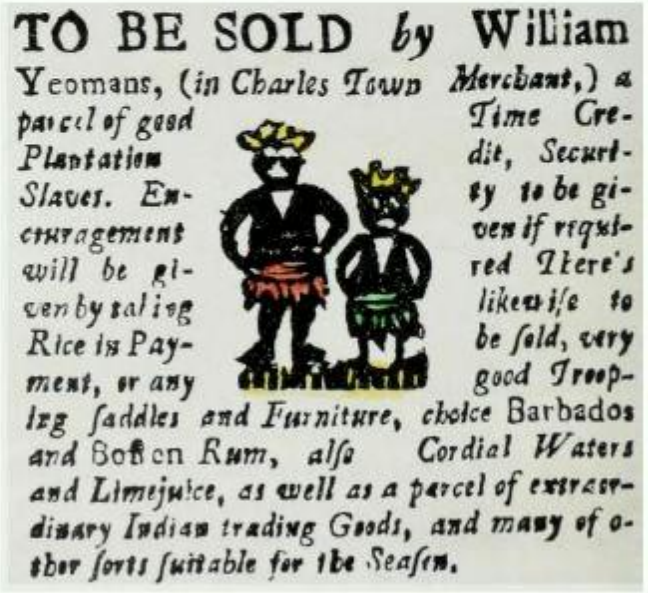
TO BE SOLD by William Yeomans, (in Charles Town Merchant,) a parcel of good Plantation Slaves. Encouragement will be given by taking Rice in Payment, or any sorting Saddles and Furniture, choice Barbados and Boston Rum, also Cordial Waters and Limejuice, as well as a parcel of extraordinary Indian trading Goods, and many of other sorts suitable for the Season. Time Credit, Security to be given if required There's likewise to be sold, very good Troop-

दास-व्यापारी स्थानीय समाचार पत्रों में अपनी दास-बिक्री का विज्ञापन देते थे, जैसा कि 1744 में चार्ल्स-टाउन के इस विज्ञापन में ऊपर दिखाया गया था.

"रिश्तेदार और दोस्त सब एक-दूसरे अलग-अलग हो गए," उसने लिखा. उनमें से अधिकांश ने फिर कभी अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को नहीं देखा.

जो गुलाम बिक नहीं पाए उन्हें "कचरा" कहा जाता था, और उन्हें कम कीमत पर बेच दिया जाता था. जो गुलाम फिर भी नहीं बिकते उन्हें अक्सर भोजन या पानी के बिना गोदी पर छोड़ दिया जाता था. पास के टापुओं के गुलाम उनमें से कुछ को बचा लेते थे, लेकिन उनमें से कई गुलाम भुखमरी या प्यास से मर जाते थे.

जब दास दक्षिण कैरोलिना के चार्ल्स-टाउन पहुँचे, तो यह सुनिश्चित करने के लिए कि किसी भी दास को कोई बीमारी नहीं है उन्हें दस दिनों तक कीट-घर में बंद रखा जाता था. कीट-घर बंदरगाह के पास किसी टापू पर स्थित होता था और रोगग्रस्त लोगों को रखने के लिए इस्तेमाल किया जाता था. यदि जहाज पर किसी को चेचक होती तो उस दास को एक महीने तक कीट-घर में रखा जाता था. चार्ल्स-टाउन के पास एक लैंडिंग या गोदी को अभी भी "इग्बो" लैंडिंग कहा जाता है, क्योंकि पश्चिम-अफ्रीका के बहुत सारे "इग्बो" जनजाति के लोगों ने वहां पानी में कूदकर आत्महत्या की थी.

चार्ल्स-टाउन का नाम परिवर्तन

चार्ल्स-टाउन, साउथ कैरोलिना का नाम इंग्लैंड के राजा चार्ल्स द्वितीय के सम्मान में रखा गया था. 1783 में क्रांतिकारी युद्ध के बाद उसका नाम बदल कर चार्ल्सटन कर दिया गया.

वर्जीनिया की जेम्सटाउन कॉलोनी में गुलाम आते हैं.

अध्याय तीन

अमेरिका में व्यापार दास

1619 में, मेफ्लावर जहाज़ के मैसाचुसेट्स में उतरने के एक साल पहले; बीस अफ्रीकियों को एक डच जहाज पर वर्जीनिया के जेम्सटाउन की ब्रिटिश कॉलोनी में लाया गया था. जहाज के कप्तान ने औपनिवेशिकों के हाथ कुछ गुलामों को बेच दिया, जो एक तरह के बंधुआ मज़दूर थे, और उन्हें कई वर्षों तक बिना वेतन के काम करना पड़ा. कुछ गुलामों को कई साल काम करने के बाद मुक्त कर दिया जाता था; जबकि कुछ पूरे जीवन गुलाम बने रहते थे.

शताब्दी के अंत तक, दक्षिणी-अमेरिकी उपनिवेशों में बड़े-बड़े वृक्षारोपण (प्लांटेशन्स) विकसित हो रहे थे. जल्द ही, प्रत्येक अफ्रीकी जो नई दुनिया में लाया जाता था, या जो दासता में पैदा होता था, उसे दास माना जाता था.

1700 के मध्य तक, मेन से लेकर जॉर्जिया तक के तटीय शहरों में दास-व्यापारी और एजेंट मौजूद थे. सबसे सक्रिय दास-बंदरगाह न्यूपोर्ट, ब्रिस्टल, रहोड आइलैंड, चार्ल्सटन, दक्षिण कैरोलिना जैसे छोटे शहरों में थे. व्यापारी, जहाज मालिक, एजेंट और गुलामों का कारोबार करने वाले लोग फिलाडेल्फिया, पेंसिल्वेनिया, न्यूयॉर्क और बोस्टन, मैसाचुसेट्स जैसे बड़े शहरों में भी मौजूद थे.

बोस्टन और न्यू-इंग्लैंड के अन्य शहर तब जहाज निर्माण के केंद्र थे. उपनिवेशों में निर्मित जहाज आमतौर पर इंग्लैंड में बने जहाज़ों की तुलना में बहुत छोटे होते थे, और एक छोटे दल द्वारा चलाए जाते थे.

वर्जीनिया के लिए तम्बाकू

जॉन रॉल्फ, जेमस्टाउन में एक शुरुआती बसने वाले ने, पोकाओन्तास से शादी की, जो एक अमेरिकी इंडियन प्रमुख, जॉन रॉल्फ की बेटी थी. जॉन रॉल्फ, वेस्ट-इंडीज से तंबाकू के बीज लाया और उसने 1614 में उन्हें वर्जीनिया में उसे उगाया. उसने तंबाकू के सूखे पत्तों को यूरोप में भेजा जहाँ वे काफी लोकप्रिय हुए. कुछ साल बाद ही, वर्जीनिया के किसानों ने 50,000 पाउंड (22.680 किलोग्राम) तंबाकू यूरोप भेजा. किसानों (प्लांटर्स) ने तंबाकू से बहुत पैसा कमाया, जिससे कॉलोनी की अर्थव्यवस्था के लिए तंबाकू की फसल बहुत महत्वपूर्ण बनी.

"डिजायर" अमेरिका से दासों को ले जाने वाला पहला जहाज, मार्बलहेड, मैसाचुसेट्स में बनाया गया था. 1638 में "डिजायर" पास के सेलम से पिक्वोट इंडियंस बंदियों को लेकर रवाना हुआ. इन अमेरिकी इंडियंस को अंग्रेज़ों ने युद्ध में कैद किया था. ब्रिटिश वेस्ट इंडीज में पिक्वोट इंडियंस को बेचने के बाद,"डिजायर" का कप्तान विलियम पियर्स, तंबाकू, नमक और कुछ काले दासों के साथ न्यू इंग्लैंड लौटा जिसे उसने कनेक्टिकट में बेचा.

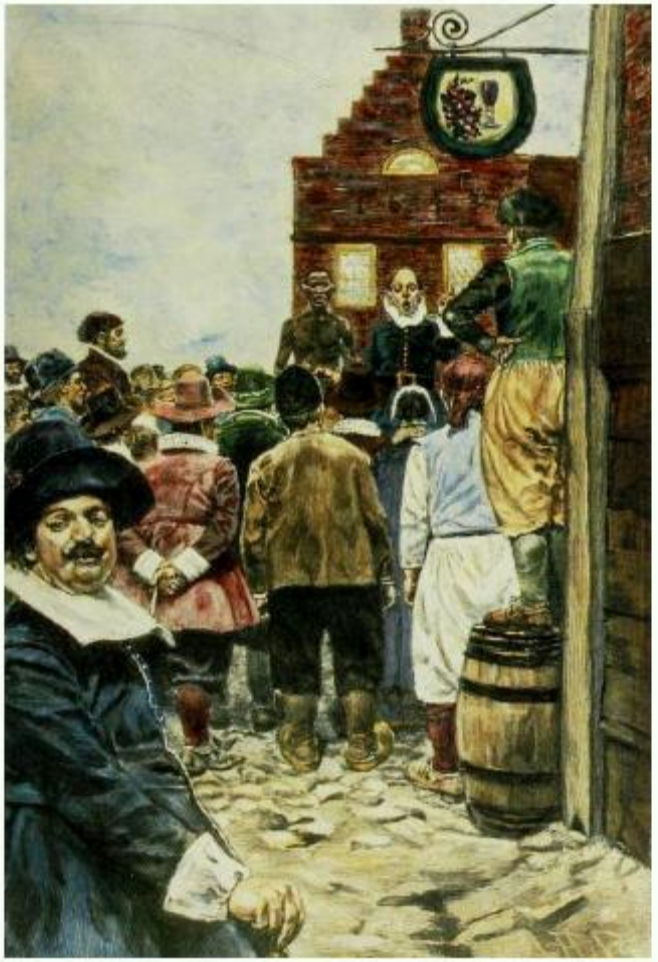

बाहर एक दास-व्यापारी सार्वजनिक नीलामी आयोजित कर रहा है.

"डिजायर" जहाज के पंद्रह साल बाद, बोस्टन में कुछ व्यवसायियों ने तीन बड़े जहाजों का निर्माण करने के लिए पूँजी लगाई, उन्होंने चालक दल को किराए पर लिया, और फिर खूब माल खरीदा. उनमें से एक जहाज "रेनबो" सोने, चांदी, हाथी दांत और दासों की तलाश में अफ्रीका रवाना हुआ. लौटते वक्त "रेनबो" वेस्ट इंडीज में रुका और उसने गुलामों को बेचकर, न्यू-इंग्लैंड में बेचने के लिए शराब, चीनी, नमक और तंबाकू खरीदी.

चावल का उपहार

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि एक किंवदंती के अनुसार 1600 के दशक के अंत में, मैडागास्कर - जो अफ्रीका के पश्चिम में एक द्वीप था, से एक जहाज ने तूफान से बचने के लिए चार्ल्स-टाउन के बंदरगाह में शरण ली. जहाज के कप्तान ने कैरोलिना के गवर्नर को कुछ चावल के बीज दिए - जो कॉलोनी की मूल प्रगति में बहुत काम आए. कैरोलिना का निचला तटीय मैदान समुद्र के पास था और वो चावल उगाने के लिए एक आदर्श स्थान था.

इंग्लैंड की ठंडी जलवायु में चावल नहीं उग सकते थे. पर कैरोलिना के किसानों को चावल उगाना नहीं आता था. लेकिन गुलामों को चावल उगाने की तरकीब पता थी. अफ्रीका के चावल उगाने वाले क्षेत्रों से आए दासों ने जहां चावल उगाया जाना था वहां नमक के पानी को बहने से रोकने के लिए बांधों का निर्माण किया. उन्होंने वहां पेड़ों को काटा और चावल के खेतों के लिए नहरें खोदीं. गुलामों ने वहां बहुत अच्छी तरह से चावल की फसल को उगाया. दासों ने चावल के पौधों के डंठल को काटा और फिर उसे पीटकर भूसी और दानों को अलग-अलग किया.

रंक से राजा तक

1733 में गरीब अंग्रेजी लोगों को बसाने के लिए जॉर्जिया को एक कॉलोनी के रूप में स्थापित किया गया था. सबसे पहले, जॉर्जिया के औपनिवेशिक अधिकारियों ने दासता की अनुमति नहीं दी. उन्हें लगा कि गुलामी, गरीबों के बीच आलस्य को बढ़ावा देगी. 1749 में गुलामी के खिलाफ क़ानून को बदल दिया गया था, क्योंकि उससे सिर्फ उत्तर कैरोलिना के गुलाम मालिक ही अमीर हो रहे थे. गुलामी की अनुमति के बाद, जॉर्जिया में चावल और कपास के बागान और खेत विकसित हुए, और जल्द ही जॉर्जिया के किसान भी समृद्ध हो गए.

फिर उन्होंने चावल को नावों पर लादा. उसके बाद गुलाम, कैरोलिना की नदियों द्वारा चावल को समुद्र तक ले गए जहां से उसे इंग्लैंड भेज दिया गया और ऊंची कीमत पर बेचा गया.

एक नए देश का जन्म

अक्टूबर 1774 में फिलाडेल्फिया, पेनसिल्वेनिया में कांग्रेस की पहली बैठक हुई. प्रतिनिधियों ने ग्रेट-ब्रिटेन के साथ उपनिवेशों की समस्याओं पर चर्चा की. पर उन्होंने एक प्रस्ताव पारित किया कि अब वे उपनिवेशों में और गुलामों को लाने अनुमति नहीं देंगे. ब्रिटिश सरकार ने इस प्रस्ताव को मानने से इनकार कर दिया क्योंकि कई प्रमुख अंग्रेजों ने रॉयल अफ्रीका कंपनी में बहुत पैसा लगाया था. यह कंपनी उपनिवेशों से गुलामों को सप्लाई करने का काम करती थी.

जब उपनिवेशों ने ब्रिटेन से आज़ाद होने की घोषणा की, तो कॉन्टिनेंटल कांग्रेस में वर्जीनिया के वकील थॉमस जेफरसन ने ब्रिटेन से कॉलोनियों को खुद को मुक्त करने का फैसला किया. उन्होंने पहले मसौदे में दासता का उल्लेख किया, लेकिन कैरोलिना कॉलोनी ने दबाव डालकर दासता का उल्लेख हटवा दिया.

क्रांतिकारी युद्ध - रिवोल्यूशनरी वॉर (1775-1783) के दौरान दास व्यापार में गिरावट आई. कुछ गुलाम जहाज अब समुद्री डाकू-जहाज बन गए. निजी स्वामित्व वाले जहाज़ों को दुश्मन के जहाजों को पकड़ने की अनुमति थी. एक अंग्रेजी निजी जहाज़ के कप्तान ने वेस्ट-इंडीज के तट से एक फ्रांसीसी जहाज से लड़ने में मदद करने के लिए अपने जहाज की तोपों पर पचास अफ्रीकियों को नियुक्त किया. दासों ने सभी से लड़ाई लड़ी, कप्तान ने अपनी दैनिक लॉगबुक में उल्लेख किया कि वह उन्हें बेचने के लिए जमैका के द्वीप पर गया.

पर युद्ध के बाद बढ़ती कपास की फसल के कारण अमीरों की दासता में नई रुचि पैदा हुई. 1790 तक दक्षिणी राज्यों के किसानों की मिट्टी खराब हो गई थी. अब वहां फसलों को उगाना मुश्किल था.

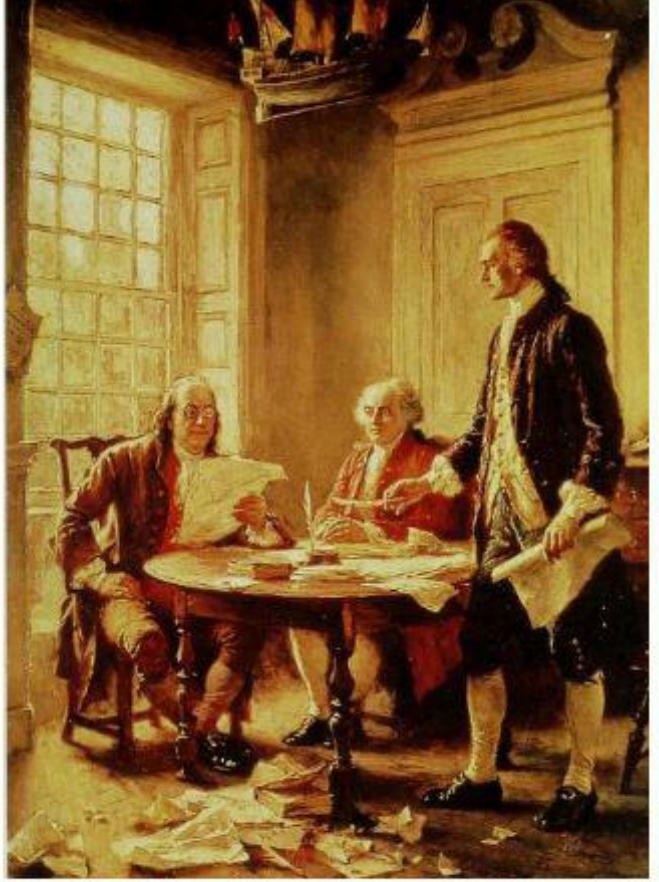

बेंजामिन फ्रैंकलिन, जॉन एडम्स और थॉमस जेफरसन "स्वतंत्रता की घोषणा" के पहले मसौदे पर चर्चा करते हुए.

उस समय, यूरोप तम्बाकू की फसल से लबालब भर गया था. अब स्पेन में भी तम्बाकू उगाई जाती थी, स्पेनिश वेस्ट इंडीज और डच ईस्ट इंडीज (अब इंडोनेशिया) में भी. अन्य फसलें, जैसे चावल और इंडिगो (कपड़े को नीला करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक पौधा), अब पहले जितने लाभदायक नहीं रहे थे. पर इंग्लैंड में विकसित नई मशीनरी ने कच्चे कपास की मांग बढ़ा दी थी. इंग्लैंड के एक नए शिक्षक एली व्हिटनी ने कपास की "जिन" मशीन का आविष्कार किया था.

गुलाम कपास की "जिनिंग" मशीन को चला रहे हैं, जबकि उनके मालिक कपास का निरीक्षण कर रहे हैं.

प्रतिष्ठित नागरिकों ने भी गुलामों का कारोबार किया

औपनिवेशिक अमेरिका में दासता जीवन का एक तरीका था, जैसा कि प्रागैतिहासिक काल से अन्य स्थानों पर चला आया था. समुदाय में सम्मानित होने वाले कई पुरुष दास व्यापार में सक्रिय थे जैसे पीटर फेनुइल, जिन्होंने बोस्टन के फेनीसिल हॉल का निर्माण किया था, वो एक गुलाम जहाज के मालिक थे. फिलाडेल्फिया के रॉबर्ट मॉरिस ने रिवोल्यूशनरी वॉर में बहुत पूँजी लगाई थी और उन्होंने सेना के लिए बहुत पैसा जुटाया था, पर वो भी एक दास व्यापारी थे. जॉन पॉल जोन्स, जिन्हें युद्ध में उनकी वीरता के कारण अमेरिकी नौसेना के पिता के रूप में जाना जाता है, दास जहाजों पर चालक दल के एक सदस्य थे. जॉर्ज वाशिंगटन, थॉमस जेफरसन के साथ अमरीका के कई पूर्व प्रेजिडेंट गुलामों के मालिक थे.

वो एक ऐसी मशीन थी जो कपास को बीजों से, हाथ की तुलना में बहुत तेजी से अलग करती थी. कपास अब एक प्रमुख फसल बन गई थी, जिसकी रोप 2,000 से 3,000 एकड़ (810 से 1,200 हेक्टेयर) में होती थी. उसके कारण अब अमेरिकी प्लांटर्स और भी अधिक गुलाम मजदूर चाहते थे.

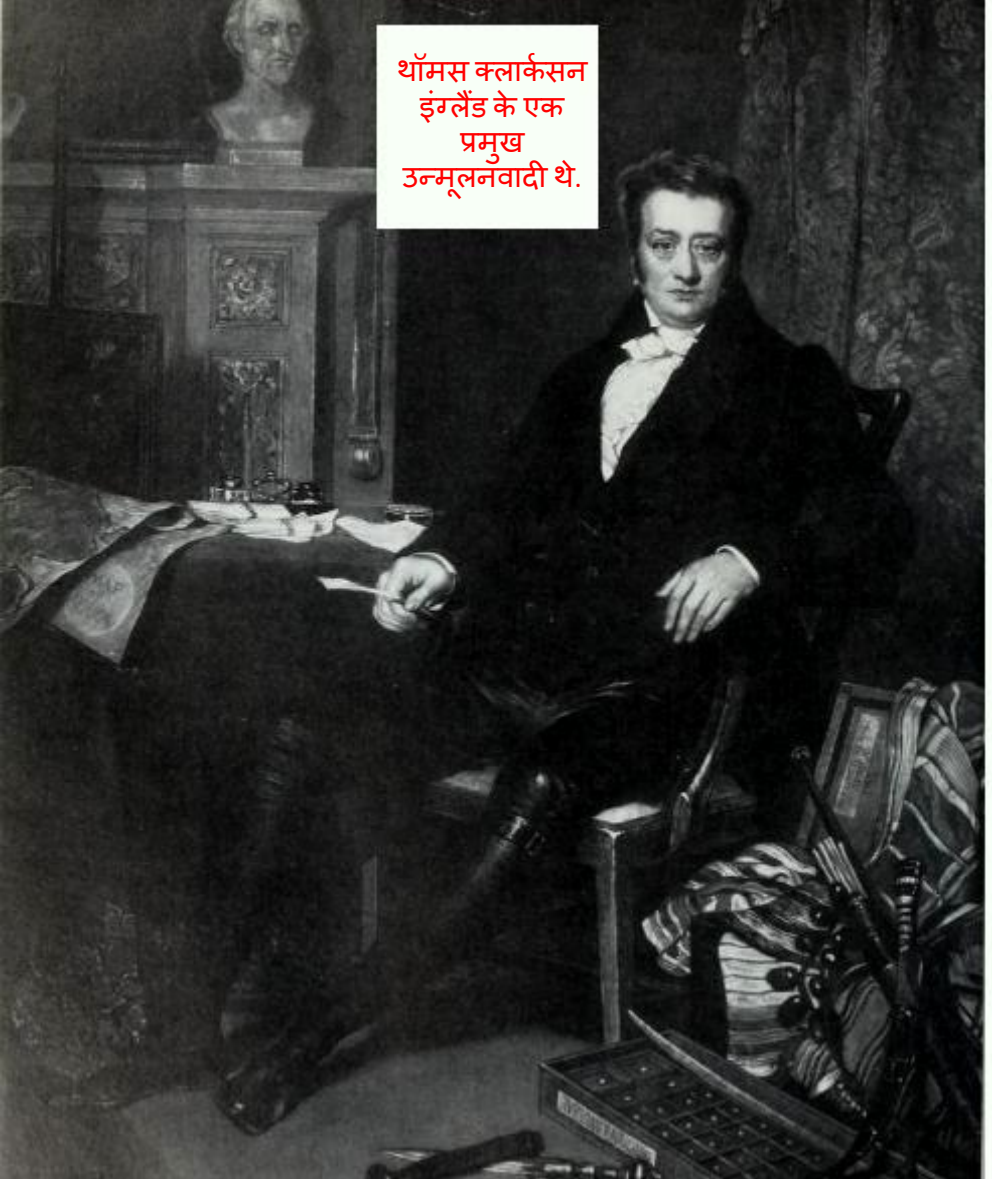

थॉमस क्लार्कसन इंग्लैंड के एक प्रमुख उन्मूलनवादी थे.

चौथा अध्याय

दास-व्यापार पर प्रतिबंध

1785 में, एक अंग्रेजी कॉलेज के छात्र थॉमस क्लार्कसन ने गुलामी की बुराइयों के बारे में पढ़ा और एक पुरस्कार विजेता निबंध लिखा जिसका शीर्षक था "क्या उनकी इच्छा के विरुद्ध दूसरों को गुलाम बनाना वैध है?“

क्लार्कसन ने दास-व्यापार को समाप्त करने के लिए जो कुछ भी संभव था वो करने का फैसला किया. वो लिवरपूल और अन्य ब्रिटिश दास बंदरगाहों पर गए, और वहां उन्होंने नाविकों के साथ बातचीत की. उन्होंने उन सरायों का भी दौरा किया जहां युवाओं को बहुत अधिक शराब पीने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था और फिर उन्हें दास जहाजों पर ले जाया जाता था और चालक-दल जैसे सेवा करने के लिए मजबूर किया जाता था.

गुलामी के खिलाफ कविताएँ और गीत

अमेरिकी और ब्रिटिश कवियों ने दास-व्यापार के खिलाफ कविताएँ लिखीं. संगीतकारों ने कविताओं और गीतों को संगीत दिया जिन्हे इंग्लैंड में सामाजिक बैठकों में गाया गया. अमेरिका के जोशिया वेडवुड, एक प्रसिद्ध अंग्रेजी कुम्हार ने एक मूर्ती बनाई - जो गुलामी उन्मूलन यानि एंटीस्लेवरी आंदोलन का प्रतीक बनी. मूर्ती, घुटनों के बल चलते एक काले आदमी की थी जिसके हाथ और पैर बंधे थे, और वहां लिखा था : "क्या मैं एक आदमी और एक भाई नहीं हूँ?" मूर्ती का यह डिज़ाइन तम्बाखू के डिब्बों पर सजा था, और अटलांटिक के दोनों लोग लोगों ने इस डिज़ाइन के ब्रोच, कंगन और हेयर-पिन पहने थे.

क्लार्कसन ने दास जहाजों का भी निरीक्षण किया और जहाजों के डॉक्टरों, सेवानिवृत्त दास व्यापारियों और समुद्री कप्तानों से भी चर्चा की. उन्होंने क्रूर उपकरण - हथकड़ी, जंजीर, अंगूठे के स्क्रू, और धातु के मुंह खोलने वाले उपकरण एकत्र किए. उन्होंने कस्टम हाउसों, जहाजरानी के रिकॉर्ड रखने वाली इमारतों में, जहाजों के आगमन, प्रस्थान और कार्गो नोट्स का भी अध्ययन किया.
दासों के साथ बर्ताव के बारे में जानकारी इकट्ठी करने के दौरान, क्लार्कसन ने उन ब्रिटिश नाविकों के भी रिकॉर्ड पाया, जो दास-जहाजों पर काम करते थे. उन्होंने पाया कि अफ्रीका जाने वाले नाविकों में से आधे से भी कम ब्रिटिश नाविक ही ज़िंदा वापस लौटते थे, और उनमें से अधिकांश जीवन भर लिए बीमार पड़े रहते थे.
एक दिन क्लार्कसन ने एक नाविक के साथ बात की, जिसने हाल ही में अपने जहाज के कप्तान को एक अन्य नाविक की हत्या करते हुए देखा था.

जब क्लार्कसन बंदरगाह छोड़ रहा था, तभी कुछ शरारती लोगों के एक गिरोह ने उस पर हमला करने की कोशिश की. हमले के बावजूद क्लार्कसन बच गए और उन्होंने दास-व्यापार की जांच जारी रखी. उन्होंने जीवन भर गुलामों के व्यापार के खिलाफ लिखा और अपनी आवाज़ बुलंद की.
1789 में, विलियम विल्बरफोर्स ने संसद - ब्रिटेन के कानून बनाने वाले निकाय में वो सबूत प्रस्तुत किये जो क्लार्कसन ने एकत्र किए थे, लेकिन दास-व्यापार पर प्रतिबंध लगाने के लिए उन्हें समर्थन नहीं मिला. ब्रिटिश फैक्ट्री मालिक, जहाज निर्माता, और दास-व्यापारी डरते थे कि कहीं उनकी पूँजी न डूब जाए.

हालाँकि, 1807 में, संसद ने दास व्यापार पर प्रतिबंध लगाने वाला एक कानून पारित किया. 1808 में अमेरिका ने दासों के आयात पर प्रतिबंध लगाया. अब तक, अमेरिका ने फ्रांस से लुइसियाना क्षेत्र को खरीदकर अपना आकार दोगुना कर लिया था. अमेरिका और अधिक दास चाहता था - कपास और चीनी उगाने के लिए. कुछ अफ्रीकियों, यूरोपीय और अमेरिकियों ने जुर्माना, कारावास और यहां तक कि व्यापारिक दासों को लाने और रखने के लिए मौत तक का जोखिम उठाया.

इंग्लैंड में दास प्रथा के उन्मूलन में शार्प, मैकाले, विलबरफोर्स, बक्सटन और क्लार्कसन शामिल थे.

ब्रिटिश जहाज़ों ने अफ्रीका में गश्त लगाई

ब्रिटिश गश्ती नौकाएं अफ्रीका के वेस्ट कोस्ट की ओर रवाना हुईं. अगर उन्हें किसी भी जहाज पर दास ले जाने का संदेह होता तो वे उसे रोकती थीं. वैसे इन जहाजों को पकड़ना आसान नहीं था. शिपबिल्डरों ने अब और तेज चलने वाले जहाज बनाए. अब व्यापारी उनका इस्तेमाल करते थे. कुछ दास-जहाज़ गश्ती दल के पास आने से पहले ही दासों को समुद्र में फेंक देते थे. अंग्रेजी कप्तान ने अवैध दास-व्यापार में लिप्त "ब्रिलिएंट" नामक एक जहाज की कमान संभाली. जब चार ब्रिटिश गश्ती नौकाएं उसके पास पहुंची तो कप्तान ने दासों को लंगर से बांधने का आदेश दिया और फिर लंगर को समुद्र में गिरा दिया. सभी गुलाम डूबकर मर गए.

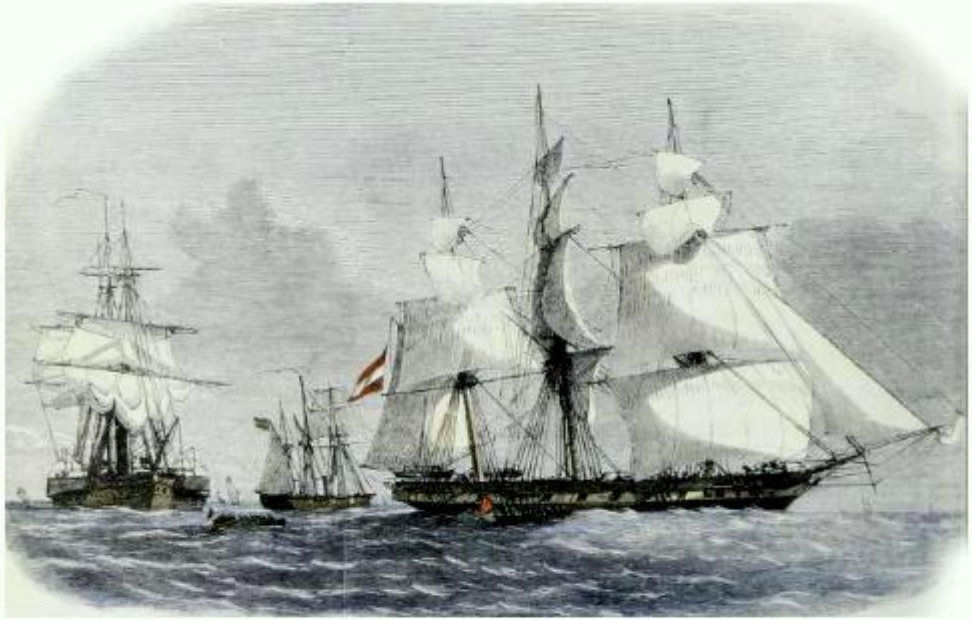

ब्रिटिश जहाज ने एक गुलाम जहाज पर कब्जा किया है.

इन कठिनाइयों के बावजूद, ब्रिटिश जहाजों ने 1,635 गुलाम जहाजों को पकड़ा, और 160,000 से अधिक गुलामों को मुक्त किया. कुछ को फ्री-टाउन में ले जाया गया - यह वो शहर था जिसे अंग्रेजों ने 1787 में मुक्त दासों के लिए स्थापित किया था. (यह अब अफ्रीकी देश सियरा-लियोन की राजधानी है.) अन्य गुलामों को अमेरिका द्वारा स्थापित एक अफ्रीकी देश लाइबेरिया ले जाया गया. 1816 में, अमेरिका के कुछ मुक्त अश्वेत भी लाइबेरिया में जाकर बस गए.

गुलामों को कैद करने के लिए भारी लोहे के कफ (शैकल्स) का इस्तेमाल किया जाता था.

अब क्योंकि ब्रिटिश जहाज अफ्रीका की वेस्ट-कोस्ट पर गश्त लगा रहे थे, तब कई गुलाम ले जाने वाले जहाजों ने महाद्वीप के दक्षिणी सिरे पर केप होप से होकर लंबी यात्रा करना सुरक्षित पाया.

अब तक, मिडिल ईस्ट के कई अरबों ने अफ्रीका के पूर्वी तट पर व्यापारिक चौकियां स्थापित की थीं. स्वाहिली दास व्यापारियों की मदद से इन व्यापारियों ने अफ्रीका के अंदरूनी हिस्सों में दासों की खरीद-फरोख्त का व्यापार ज़ारी रखा.

एक प्रसिद्ध अफ्रीकी दास-व्यापारी

अफ्रीका के अंदरूनी हिस्से में टीपू टीबी नाम का एक दास-व्यापारी था. उसके नाम का अर्थ था "बंदूकों की आवाज." क्योंकि जब वो गाँवों पर छापा मारता तब लोग बंदूकों की आवाज़ें ही सुनते थे. टीपू टिब और कुछ अन्य अरब व्यापारियों ने काले दासों को कई तरीकों से सेवा करने के लिए मजबूर किया. यह व्यापारी अक्सर गुलामों की सहायता से हाथी-दांत का व्यापार करते थे. इसके लिए गुलामों को अंदर के जंगलों से हाथी के भारी टस्क (दांत) लेकर समुद्री तट तक लेकर जाना पड़ता था. कुछ गुलाम और अधिक दास प्राप्त करने के लिए अपनी खुद की जनजातियों पर छापा मारने के लिए मजबूर हुए. फिर वे लड़कियां और महिलाएं अक्सर घरेलू नौकर बनती थीं या फिर अरब मर्दों की पत्नियां बनने के लिए मजबूर होती थीं.

हजारों दासों को एक साथ बाँधा जाता था और उन्हें सैकड़ों मील की दूरी तय करने के लिए मजबूर किया जाता था. वहाँ से उन्हें नाव द्वारा ज़ांज़ीबार ले जाया जाता था जो तट से 24 मील (39 किमी) दूरी एक द्वीप था. (ज़ांज़ीबार अब तंजानिया का हिस्सा है.)

गुलामों की राजधानी - ईस्ट कोस्ट

1832 में, ज़ांज़ीबार का सबसे बड़ा शहर, जिसका नाम भी ज़ांज़ीबार ही था, एक बड़े अरब राज्य की राजधानी बना और साथ-साथ वो पूर्वी तट का प्रमुख दास बाजार में भी स्थापित हुआ. हर साल, बीस हज़ार से चालीस हज़ार गुलामों को ज़ांज़ीबार लाया जाता था, और जब कभी भी गुलामों का एक नया जहाज आता तब बाज़ार के चौक में ऊपर और नीचे तक खरीदारों की भीड़ लग जाती थी.

अफ्रीका के बाजार आज भी काफी पनपे और समृद्ध हैं.

उनमें से एक तिहाई गुलामों को लौंग, कोको, और नारियल उगाने वाले ज़ांज़ीबार के किसानों (प्लांटर्स) को बेच दिया जाता था. साबुन बनाने के लिए नारियल के तेल का इस्तेमाल होता था. बाजार में बिक्री से पहले दास गुलामों के शरीर को चमकाने के लिए उनकी नारियल के तेल से मालिश की जाती थी.

युवा लड़के और लड़कियां गुलामों की, सबसे ज्यादा कीमत होती थी और बूढ़े लोगों की सबसे कम. कभी-कभी, 150 से अधिक लोगों को एक पिंजरे में पैक किया जाता था और फिर गुलामों को थोक के हिसाब से पिंजरे के हिसाब से बेचा जाता था.

अरब लोग हर साल हजारों गुलामों को ज़ांज़ीबार द्वीप में लाते थे.

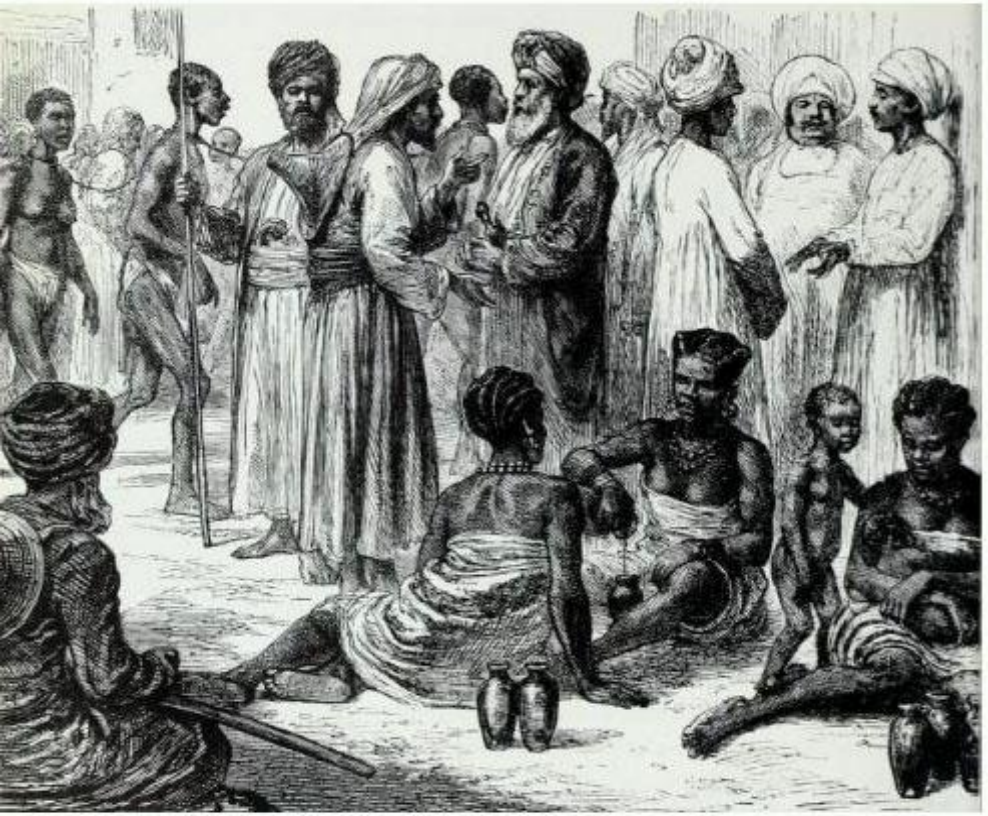

जो दास बिक नहीं पाते थे, उन्हें ज़ांज़ीबार की अँधेरी गुफाओं में रखा जाता था. बाद में उन्हें अरब, इराक, फारस (अब ईरान), या तुर्की में बेचा जाता था. वहां पर अरब व्यापारी गुलामों को बहुत ऊंचे दाम पर बेंचते थे और अपनी लागत से दस गुना अधिक धन कमाते थे.

अमेरिकी गुलाम व्यापारियों ने भी ज़ांज़ीबार का बाजार खोज निकाला. अमेरिकी जहाज, ज़्यादातर सलेम, मैसाचुसेट्स से ज़ांज़ीबार के बंदरगाह पर अपना लंगर डालते. ज़ांज़ीबार के दास बाजार में, वे सस्ते सूती कपड़े बेचकर गुलामों और हाथी दांत खरीदते थे. बंदरगाह की रखवाली करने वाले ब्रिटिश गश्ती जहाज इस कारोबार को रोकने में असमर्थ थे. अमेरिकी समुद्री कप्तान अपने जहाज़ों पर विदेशी झंडे लहराते और झूठे नामों और नंबरों से अपने जहाजों को पंजीकृत कराते थे.

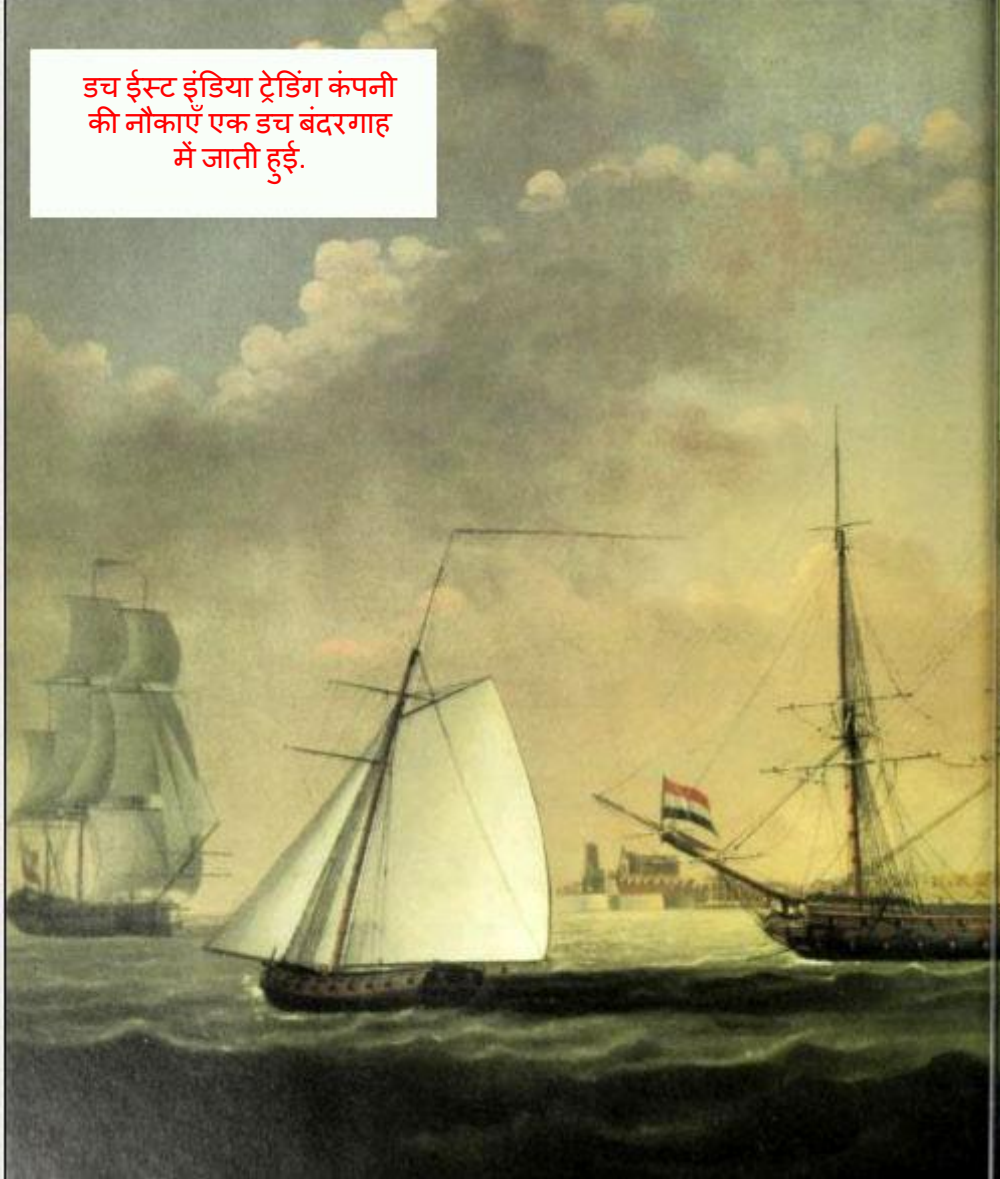

डच ईस्ट इंडिया ट्रेडिंग कंपनी की नौकाएँ एक डच बंदरगाह में जाती हुई.

पांचवां अध्याय

दक्षिण अफ्रीका में यूरोपीय

अफ्रीका की निचली नोक पर बसने वाले सबसे पहले गोरे लोग डच ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए काम करते थे. वे 1632 में वो एक बेस कैंप स्थापित करने के लिए वहां आये थे, जिससे डच जहाजों को अपने कर्मचारियों के लिए ताजी सब्जियां और मांस मिल सके. गोरे लोगों के आने के बाद अधिकांश काले लोग उस क्षेत्र को छोड़कर चले गए. इसलिए डच ईस्ट इंडिया कंपनी अफ्रीका के अन्य हिस्सों से गुलामों को खेतों में काम करने के लिए लाई.

1804 की यह पेंटिंग दक्षिण अफ्रीका के एक गुलाम को अपने बोअर मास्टर के साथ शिकार से लौटते हुए दिखाती है.

बाद में, डच ईस्ट इंडिया कंपनी के कुछ कर्मचारियों ने खुद अपनी खेतीबाड़ी शुरू की और वे "बोअर्स" के रूप में जाने गए."बोअर्स" एक डच शब्द है जिसका अर्थ है "किसान". जल्द ही जर्मन और फ्रांसीसी किसान भी उनके साथ जुड़ गए. एक समूह के रूप में वे खुद को "अफरीकनर" बुलाने लगे. उनकी एक नई भाषा थी "अफ्रीकांस". 1700 तक, गोरों ने उस क्षेत्र की अधिकांश उपजाऊ ज़मीन पर अपना कब्जा कर लिया था. जो अश्वेत अभी भी वहां रहते थे, वे उनके सेवक या उनके दास बन गए.
डच और ब्रिटिश कई वर्षों तक दक्षिण-अफ्रीका में लड़े. 1814 तक वहां पर अंग्रेजों ने शासन किया पर 1834 में उन्होंने गुलामी को समाप्त कर दिया. आज़ाद होने के बाद अफ्रीकी गुलाम मालिकों के खेत छोड़कर चले गए.

डच ईस्ट इंडिया कंपनी

कई देशों में व्यापार करने के लिए प्रतिस्पर्धा बड़ी भयंकर थी. डच सरकार ने डच ईस्ट इंडिया कंपनी को अपने व्यापार को बचाने और बढ़ाने में मदद करने के लिए विशेष अधिकार दिए थे. सरकार की अनुमति के साथ, डच ईस्ट इंडिया कंपनी व्यापार कर सकती थी, स्थानीय अधिकारियों के साथ संधियाँ कर सकती थी, किलों का निर्माण कर सकती थी. यहाँ तक कि वो एक सेना भी रख सकती थी. कंपनी का मुख्यालय डच ईस्ट इंडीज (अब इंडोनेशिया) में था, और उसके जहाज केप ऑफ़ गुड होप की यात्रा करते हुए जाते थे जहाँ बेस कैंप उनके खाने की सप्लाई पूरी करता था.

तब कई हज़ार अफ्रिकानर्स ने अपने खेतों को छोड़ दिया और उन्होंने अपने सामान को बैलों द्वारा खींचे गए वैगनों में लोड किया. फिर वे अंदरूनी इलाकों में गए. बंटू बोलने वाले लोगों ने उन्हें रोकने की कोशिश की और दोनों गुटों में खूब लड़ाइयां हुईं. बाद में अफ्रिकानेर्स दक्षिण अफ्रीका के अंदरूनी हिस्सों में जाकर बस गए.
स्कॉटिश मिशनरी डॉ. डेविड लिविंगस्टोन ने बताया कि जब अफ्रीका के एक गांव में अफ्रिकानर्स आए तो क्या हुआ. "अपने रिवाज के अनुसार, उन्होंने बीस या तीस [देशी] महिलाओं की मांग की जो उनके बागों की निंदाई करें. मैंने इन महिलाओं को अपने गाँवों को छोड़ते हुए देखा. .. वे अपने सिर पर खाना, पीठ पर बच्चे और अपने कंधों पर कुदाल लेकर जा रही थीं."
डेविड लिविंगस्टोन ने अफ्रीकी लोगों को ईसाई बनने के लिए प्रोत्साहित किया. उन्होंने दास व्यापार की जगह कानूनी व्यवसाय विकसित करने की योजना बनाई. एक शाम जब लिविंगस्टोन और कुछ अन्य मिशनरी अपने टेंट के बाहर आराम कर रहे थे, तब गुलामों का एक समूह उनके पास आया. भारी लकड़ी के योक (जूआ) द्वारा उन्हें एक-दूसरे से बांधा गया था. उनके गार्ड कुछ अफ्रीकी थे. गोरे लोग जानते थे कि अगर वे हस्तक्षेप करते, तो क्षेत्र के पुर्तगाली दास व्यापारी उन पर हमला कर सकते थे या फिर उनकी सप्लाई को नष्ट कर सकते थे. "हम क्यों नहीं करेंगे?" लिविंगस्टोन ने पूछा.

डेविड लिविंगस्टोन एक स्कॉटिश मिशनरी थे. उन्होंने दास व्यापार रोकने की कोशिश की.

गोरे लोग खड़े हो गए और गुलाम व्यापारी जंगल में भाग गए. मिशनरियों ने अस्सी लोगों को मुक्त किया. उनमें महिलाएं और बच्चे भी थे.

डेविड लिविंगस्टोन की अफ्रीका में ही मृत्यु हुई. वो दास व्यापार को रोकने में सक्षम नहीं रहे. जब उनके लिखे नोट्स यूरोप में लौटे, तो कई अन्य यूरोपीय मिशनरियों के साथ-साथ खोजकर्ता भी अफ्रीका आए. इन लोगों ने जो कुछ किताबों लिखीं उनमें यूरोपीय लोगों ने यह धारणा दी कि दासता अफ्रीकी लोगों के लिए स्वाभाविक थी. उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि अफ्रीकी अपनी देखभाल करने में सक्षम नहीं थे और उन्हें देखभाल करने के लिए गोरों की आवश्यकता थी.

दास व्यापार ने अफ्रीका को कैसे प्रभावित किया?

दास व्यापार ने परिवारों और पूरे समुदायों को तोड़कर छिन्न-भिन्न कर दिया. जनसांख्यिकी वैज्ञानिक जो आबादी के आकार और वितरण का अध्ययन करते हैं - उनके अनुसार यह पता लगाना असंभव है कि अगर गुलाम व्यापार नहीं होता तो आज अफ्रीका में कितने और लोग रहते. वे यह भी निर्धारित नहीं कर सकते हैं कि दासों के व्यापार न होने पर वहां की भूमि पर किस तरह का बदलाव आता. क्या कुछ क्षेत्र अधिक कृषि योग्य होंते? क्या कुछ क्षेत्र अधिक औद्योगिक होतें? अगर गुलामों का व्यापार नहीं हुआ होता या यूरोपियों ने इसका विस्तार नहीं किया होता तो आज अफ्रीका कैसा होता? इन सवालों के जवाब कोई नहीं जानता है. केवल एक चीज निश्चित है. अफ्रीका ने अपने लाखों युवाओं, पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को गुलामी में खो दिया.

समय-रेखा

1433 - यूरोपीय समुद्री कप्तानों ने पश्चिमी अफ्रीका के तट का पता लगाना शुरू किया.

1442 - एक पुर्तगाली समुद्री कप्तान बारह दासों के साथ पुर्तगाल लौटा

1492 - कोलंबस ने नई दुनिया की खोज की.

1501 - स्पेन अपने कैरिबियाई उपनिवेशों (वेस्ट इंडीज) में पहले अफ्रीकियों को ले जाता है.

1619 - उत्तरी अमेरिका की पहली अंग्रेजी बस्ती वर्जीनिया के जेम्सटाउन में बीस अफ्रीकियों को लाया गया

1772 - ब्रिटेन में सभी गुलामों को मुक्त किया गया.

1807 - ब्रिटेन में दास व्यापार को समाप्त किया गया.

1808 - अमेरिका में दास व्यापार को समाप्त किया गया.

1861- 1865 अमेरिकी गृह युद्ध ने अटलांटिक दास व्यापार को समाप्त कर दिया और संयुक्त राज्य में दासता को समाप्त कर दिया गया.

1888 - ब्राजील ने अपने गुलामों को मुक्त किया.